विचार बिन्दु

निरंतर विकास जीवन का एक नियम है। और जो भी व्यक्ति खुद को सही दिखाने के लिए अपनी रूढ़िवादिता को बरकरार रखने की कोशिश करता है वो खुद को एक गलत स्थिति में पंहुचा देता है। –महात्मा गांधी

सरकार के भी हित में है पारदर्शिता

बात इस या उस राजनीतिक दल की नहीं है। बात सारे ही राजनीतिक दलों की है। बात राजनीतिक दलों से हमारे अर्थात आम नागरिक के रिश्तों की है। इस बात का तात्कालिक संदर्भ तो चुनावी बॉण्ड्स को लेकर चल रही चर्चाएं ही है। नरेंद्र मोदी सरकार ने चुनावी बॉण्ड्स की योजना यह कहते हुए शुरू की थी कि इससे राजनीतिक फण्डिंग में पारदर्शिता आएगी। तत्कालीन मंत्री (अब स्वर्गीय) अरुण जेटली ने भी यह कहा था कि इस योजना से चुनावी फण्डिंग पारदर्शी हो जाएगी। उनके अनुसार, और इससे सभी सहमत हैं, बिना पारदर्शिता के स्वतंत्र और निष्पक्ष चुनाव मुश्क़िल हैं। स्मरणीय है कि इस योजना के आने से पहले राजनीतिक फण्डिंग के रूप में सत्तर फीसदी पैसा नकद में दिया जाता था, यद्यिप बीस हज़ार रुपये से अधिक का चंदा देने पर चुनाव आयोग को बताना होता था और उस पर राजनीतिक छूट भी मिलती थी। वर्तमान भाजपा सरकार ने जब वर्ष 2017-18 के बजट से इन चुनावी बॉण्ड्स की घोषणा की तो यह उम्मीद बंधी थी कि इस योजना की वजह से सब कुछ पारदर्शी हो जाएगा और जिनकी यह जानने में दिलचस्पी है, और जो यह जानकर किन्हीं निष्कर्षों तक पहुंच सकते हैं-जैसे पत्रकार या राजनीतिक विश्लेषक- वे यह जान सकेंगे कि किसने किस दल को कितना चंदा दिया।

लेकिन ऐसा हुआ नहीं। नाम भले ही पारदर्शिता का लिया गया, परिणाम में पारदर्शिता कहीं नहीं थी। बहुत दिनों तक इधर-उधर टीका टिप्पणी होती रही, लेकिन उनसे भला सरकार क्यों विचलित होने लगी। अंततः सर्वोच्च न्यायालय के द्वार पर गुहार लगा कर इसे चुनौती दी गई और लम्बे इंतज़ार के बाद 15 फ़रवरी, 2024 को सर्वोच्च न्यायालय ने चुनावी बॉण्ड्स को रद्द कर देने का अपना ऐतिहासिक फ़ैसला सुना कर चल रही आशंकाओं को उचित माना। सर्वोच्च न्यायालय की पांच जजों की संविधान पीठ ने याचिका कर्ताओं की मांग को उचित मानते हुए बॉण्ड जारी करने वाले स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया को आदेश दिया कि वह 12 मार्च 2024 तक सारी जानकारी सार्वजनिक करे और चुनाव आयोग इस जानकारी को 15 मार्च की शाम पांच बजे तक अपनी वेबसाइट पर डाल दे। इस तरह माननीय सर्वोच्च न्यायालय ने इस जानकारी के सार्वजनिक करने की मांग को भी उचित माना और इस वित्तीय लेन-देन को पूर्णतः पारदर्शी बनाने की राह सुगम बना दी। लेकिन यह ज़रूरी तो नहीं कि जैसा आम नागरिक चाहते हैं, वैसा ही अन्य पक्ष भी चाहें। सच बात तो यह है कि हमारे यहां जो भी शक्तिशाली हैं वे पारदर्शिता के खिलाफ़ हैं। लम्बी लड़ाई के बाद हमें सूचना का अधिकार मिला, लेकिन अब यह बताने की ज़रूरत नहीं है कि कैसे संबद्धअधिकारियों व संस्थाओं ने इस अधिकार को लुंज-पुंज बनाकर पटक दिया है। वे सामान्य से सामान्य जानकारियां भी देने से मना कर देते हैं और आप असहाय हाथ मलते रह जाते हैं।

कुछ ऐसा ही इन चुनावी बॉण्ड्स के मामले में भी होता प्रतीत होता है। पहले तो भारतीय स्टेट बैंक ने सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दी गई अंतिम तिथि से ठीक एक दिन पहले यह जानकारी देने में अपनी असमर्थता ज़ाहिर करते हुए इसके लिए जून 2024 तक का समय मांगा। जून तक का समय चाहने के पीछे जो मंशा देखी गई, उसका ज़िक्र करने की ज़रूरत नहीं होनी चाहिए। लेकिन जब सर्वोच्च न्यायालय अपने फैसले पर दृढ़ रहा तो स्टेट बैंक ने तुरंत वह सारी जानकारी ज़ारी कर दी, जिसको देने के लिए उसने एक दिन पहले जून तक का समय मांगा था। यह सवाल हर विवेकशील के मन में उठना चाहिए कि अगर भारतीय स्टेट बैंक यह सारी जानकारी एक दिन में दे सकने में समर्थ था तो वह जून तक का समय क्यों मांग रहा था। ऐसा करने के पीछे उसका कोई स्वार्थ था, या किसी अन्य का स्वार्थ था!

आज सूचना प्रौद्योगिकी के समय में यह बहाना तो कोई कर ही नहीं सकता कि यह सारी जानकारी देना बहुत श्रमसाध्य है। चुनावी चंदे को लेकर बहुत बार यह बात भी कही जाती है कि किसी दानदाता के दान की जानकारी प्रकट हो जाना उसके व्यावसायिक हितों को आहत कर सकता है। मसलन अगर राजनीतिक दल ब को यह पता लग जाए कि अमुक व्यवसायी ने राजनीतिक दल अ को इतना चंदा दिया है तो वह उससे नाराज़ होकर उसके हितों को आहत कर सकता है।

भारतीय स्टेट बैंक ने अंततः जानकारी का बड़ा हिस्सा ज़ारी कर दिया, और इस जानकारी के अनुसार एक अप्रैल 2019 से 15 फ़रवरी, 2024 तक 12,516 करोड़ रुपये का राजनीतिक चंदा इन बॉण्ड्स के माध्यम से दिया गया। बैंक ने दो सूचियां दी हैं जिनमें से एक में बॉण्ड खरीदने वालों की जानकारी है और दूसरी में राजनीतिक दलों को मिले बॉण्ड्स का विवरण है। इस तरह यह तो ज्ञात हो गया कि किस दल को कितनी राशि मिली है। इस जानकारी के अनुसार सत्तारूढ़ भाजपा को सर्वाधिक 6,060 करोड़ रुपये चंदे के रूप में मिले हैं। यह जानकारी किसी के लिए भी चौंकाने वाली नहीं है। चंदे के मामले में सत्तारूढ़ दल सदा ही लाभ की स्थिति में रहता है। आज भाजपा सत्ता में है तो वह शीर्ष पर है, कल को कोई और दल होगा तो वह शीर्ष पर रहेगा। यह बहुत स्वाभाविक है। लेकिन जहां तक बात पारदर्शिता की है, विश्लेषक यह जानना चाहते थे कि किस (व्यवसायी या व्यक्ति या संस्था) ने किस दल को कितनी राशि का चंदा दिया। इस जानकारी से कार्यकारण सम्बंध स्थापित होता। लेकिन जो शक्तिशाली हैं शायदवे नहीं चाहते कि ऐसा हो। इसलिए स्टेट बैंक ने जो जानकारी दी, उसमें उन्होंने एक कमाल कर दिया। उसने वह अल्फान्यूमरिक कोड, जो हर बॉण्ड पर मुद्रित रहता है, सार्वजनिक नहीं किया। इस कोड के सार्वजनिक हो जाने पर यह मिलान सम्भव हो जाता कि किस दानी ने किस दल को कितनी राशि दी। इस खेल के बाद फिर से सर्वोच्च न्यायालय का दरवाज़ा खटखटाया गया और उसने स्टेट बैंक को आदेश दिया है कि वह यह जानकारी भी एक निश्चित समय तक सार्वजनिक करे। अब देखना है कि स्टेट बैंक के झोले में और कौन-से बहाने हैं! वैसे जितनी जानकारी सार्वजनिक हुई है वह भी काफी दिलचस्प है। मसलन, एक कंपनी का टर्न ओवर 500 करोड़ का है और उसने चंदा दिया है 410 करोड़ का। किसी ने फुर्सत में गणना की तो उसने पाया कि 500 करोड़ के टर्न ओवर वाली इस कंपनी ने 560 करोड़ के चुनावी बॉण्ड खरीदे हैं! बताइये, इस दानवीरता को क्या नाम देंगे? बात यहीं ख़त्म नहीं होती। इस कंपनी का मालिक एक अन्य कंपनी का अकाउण्ट्स हेड मात्र है! इस एक उदाहरण से यह समझा जा सकता है कि पारदर्शिता की राह में रोड़े अटकाना साभिप्राय है! यहीं यह भी बता दें कि भारतीय स्टेट बैंक ने केवल 18,871 बॉण्ड्स के बारे में ही जानकारी दी है जबकि उसे जानकारी 22,217 बॉण्ड्स के बारे में देनी थी। 3,346 बॉण्ड्स के बारे में जानकारी न देने के पीछे क्या कारण हो सकते हैं?

जब इस चुनावी चंदे की जानकारी की चर्चा हो रही है तो यह बात भी याद आना स्वाभाविक है कि हमारे यहां राष्ट्रीय आपदाओं में मदद के लिए प्रधानमंत्री सहायता कोष के होते हुए भी कोरोना विभीषिका के समय एक और कोष बनाया गया, और उस कोष को सूचना के अधिकार की परिधि से बाहर रखा गया। यह जान पाना मुश्क़िल है कि किसी भी सरकार के लिए अपने नागरिकों को यह बताने में क्या आपत्ति हो सकती है कि एक सहायता कोष में किसने कितना दान दिया और उस राशि का उपयोग कहां हुआ। यही बात चुनावी चंदे को लेकर भी है। आखिर इसे क्यों छिपाया जाना चाहिए-अगर इरादे नेक हों-कि किसने किस दल को कितना चंदा दिया! जब आप छिपाते हैं तो आपकी मंशा पर भी उंगलियां उठती हैं।

आज सूचना प्रौद्योगिकी के समय में यह बहाना तो कोई कर ही नहीं सकता कि यह सारी जानकारी देना बहुत श्रमसाध्य है। कभी हुआ करता था, आज नहीं रह गया है। चुनावी चंदे को लेकर बहुत बार यह बात भी कही जाती है कि किसी दानदाता के दान की जानकारी प्रकट हो जाना उसके व्यावसायिक हितों को आहत कर सकता है। मसलन अगर राजनीतिक दल ब को यह पता लग जाए कि अमुक व्यवसायी ने राजनीतिक दल अ को इतना चंदा दिया है तो वह उससे नाराज़ होकर उसके हितों को आहत कर सकता है। पहली बात तो यह कि सर्वोच्च न्यायालय ने इस आपत्ति को नहीं माना है, दूसरी बात यह कि यह तर्क देकर क्या यह कहने की कोशिश नहीं हो रही है कि विभिन्न व्यवसायी बड़ा चंदा देकर राजनीतिक दलों से अपने हित के फैसले करवाते हैं? अगर वाकई ऐसा है तो यह तो बहुत ख़तरनाक बात है! फैसले तो गुण दोष के आधार पर होने चाहिएं, न कि दिये गए चंदे के आधार पर।

सरकार राजनीतिक चंदे के मामले को पूरी तरह पारदर्शी बनाकर अपनी छवि को उजला रख सकती है। और उसे ऐसा करना भी चाहिए। उसे तो हर तरह के संदेहों, आशंकाओं और प्रवादों से परे होना चाहिए। सरकार की छवि बेदाग़ रहे, यह हम सबके हित में है, सबसे ज़्यादा ख़ुद सरकार के और उसको चलाने वाले राजनीतिक दल के लिए है!

–अतिथि संपादक,
डॉ. दुर्गाप्रसाद अग्रवाल,
(शिक्षाविद और साहित्यकार)

मनोविज्ञान: मानसिक दृढ़ता के आयाम

डॉ. रामावतार शर्मा

अक्सर आपन जगला क जावन पर बनी लघु फिल्में देखी होंगी। इन फिल्मों में आपने देखा होगा कि जंगली जानवरों के लिए पानी पीना भी बहुत खतरनाक कार्य होता है। यहां तक कि शेर और हाथी तक भी बहुत चौकन्ने हो कर पानी पीते हैं। मगरमच्छ, अजगर, शेर, बाघ, भेड़िये, बाज आदि अन्य जीवों को किस क्षण अपना शिकार बना लें इसका भय लिए ही वन्य जीव अपना जीवन बिताते हैं, हर क्षण चौकन्ने और भागने को तैयार। ये जानवर अपना छोटा-सा जीवन सिर्फ अपनी मानसिक दृढ़ता से ही जी सकते हैं। तुलनात्मक रूप में मनुष्य एक बहुत ही सुरक्षित जीवन जी रहा है। इस सुरक्षा का परिणाम यह हुआ है कि एक बहुत बड़ा मानव वर्ग मानसिक दृढ़ता को खोने लगा है जिसके फलस्वरूप जीवन के कितने ही कार्यों में बिखराव होने लगा है। ऐसे में मानसिक दृढ़ता के मनोवैज्ञानिक पक्ष को समझना महत्वपूर्ण हो जाता है।

मानसिक दृढ़ता एक मन:स्थिति होती है जो किसी व्यक्ति की उस क्षमता को उजागर करती है जिसके द्वारा वह तनाव या तकलीफ की हालातों का सामना करता है या इन विपरीत परिस्थितियों में काम करता है और जीवन को सामान्य स्थिति में जीता है। चाहे हालत कितने ही विपरीत क्यों न हो, जीवन में चाहे लगातार हार मिलती रहे, परिणाम लगातार नकारात्मक आते रहें परंतु मानसिक दृढ़ता वाला व्यक्ति अपना मनोबल बनाए रखता है और इस इरादे के साथ कार्य करता रहता है कि एक दिन उसके संघर्ष के फल के रूप में उसे सफलता प्राप्त होगी।

चाहे बाधाएं कितनी भी हों, चाहे परिणाम विपरीत होते रहें, चाहे लोग साथ छोड़ते रहें, चाहे उम्मीद की किरण भी दिखाई न देती हो पर दृढ़ मानसिकता वाला व्यक्ति संघर्षरत रहता है और एक ना एक दिन सफलता और सम्मान की प्राप्ति कर सकता है।

मानसिक दृढ़ता वाले लोग हर स्थिति में अपनी भावनाओं को नियंत्रित रखते हैं और अपने विचारों तथा व्यवहार में उम्मीदों को जगाए रखते हैं। सकारात्मक रवैये के साथ ये लोग वस्तुस्थिति को स्वीकार भी करते हैं और चुनौतियों के प्रति एक तरह से जागरूक रह कर, उनका अध्ययन कर कोई न कोई हल निकालने के लिए प्रयासरत रहते हैं। असफलता और बाधाओं के बीच भी ऐसे लोग मानते रहते हैं कि उनका संघर्ष एक दिन परिवर्तन लायेगा। वे सदैव कुछ नया सीखने और परिस्थितियों को बदलने के प्रति जागरूक और प्रयासरत रहते हैं।

मानसिक दृढ़ता से जुड़ी हुई एक अन्य जीवन स्थिति होती है जिसे अरक्षितता या भेद्यता (वल्नरेबल) कहा जाता है। इस स्थिति में व्यक्ति अपने आप को मानसिक या शारीरिक या फिर दोनों ही तरह से असुरक्षित महसूस करता है जिसमें कई संभावित खतरे हो सकते हैं। यह स्थिति तब उपजती है जब हम जीवन के किसी भाग में लापरवाह रहे हों, हम में जागरूकता की कमी रही हो या फिर परिस्थितियों या प्रतिद्विंदी को पहचानने में असफल रहे हों। वल्नरेबिलिटी यानि भेद्यता में हम अपने आप को आलोचनाओं से घिरा पाते है, असुरक्षित महसूस करते हैं।

परिस्थितियां ऐसी बनने लगती हैं कि हमें स्वयं और अन्य लोगों को भी हम में कोई उम्मीद की किरण नजर नहीं आती है। हम लोगों में अस्वीकार होने लगते हैं, मखौल का पात्र हो जाते हैं, बचकाना लगने लगते हैं। यही वह स्थिति है जब अरक्षितता (वल्नरेबिलिटी) मानसिक दृढ़ता का एक हिस्सा बनने लगती है। जब आप अरक्षित होते हैं, अकेले पड़ जाते हैं तब आप यदि दृढ़ मानसिकता वाले इंसान हैं तो आप जीवन को समझने के लिए अपने घर या मन की छद्म सुरक्षा से बाहर निकल कर जीवन के आम रास्ते की यात्रा पर निकल पड़ते हैं और अपने आप को सबके सामने, हर आयाम में वल्नरेबल यानि भेद्य बना देते हैं। आप अपनी अरक्षितता के साथ साथ अपनी मानसिक दृढ़ता को भी प्रदर्शित करने लगते हैं। यही वल्नरेबिलिटी अब आपकी ताकत में परिवर्तित होने लगती है क्योंकि अब आपने अकड़ को छोड़ झुकना सीख लिया है, आपके जीवन में विनम्रता प्रविष्ट हो गई है। आपका अहंकार कम हो चला है और जीवन की वास्तविकता से आपका आमना सामना होने लगा है। अब आप किले की चारदीवारी से बाहर सड़क पर आ गए हों और प्रदर्शित करने लगे हो कि अब कमजोरी शक्ति का रूप लेने लगी है।

ज्योंही आप अपनी कमजोरियों, अपनी सीमाओं को जानने लगते हैं तो समस्याओं के समाधान भी समझ में आने लगते हैं। आप आलोचनाओं को सकारात्मक रूप में लेने लगते हैं जिसके फलस्वरूप समाधान की तरफ आपकी यात्रा प्रारंभ हो जाती है। आप ने यदि दंभ का त्याग कर दिया तो देर सबेर जीवन की जटिलताओं का समाधान भी उभरने लगेगा। हमारी अरक्षितता हमें बताती है कि वे कौन से कार्य हैं जिन्हें हम नहीं कर सकते हैं और यह स्वीकारोक्ति ही आगे चल कर हमारे व्यक्तित्व में मानसिक दृढ़ता का आधार बनती है। हर व्यक्ति की अपनी कुछ कमजोरियां होती हैं लेकिन उसे इस बात का भी अहसास होना चाहिए कि उसमें मानसिक दृढ़ता की संभावनाएं भी सदैव मौजूद रहती हैं। यदि हमनें जीवन को जिया है तो हमारे समर्थक और आलोचक दोनों ही होंगे, सफलता मिलेगी परंतु असफलता का स्वाद भी हमें चखना होगा। साझा अनुभव, दार्शनिक विचार शैली, संवाद, साहित्य एवम् आत्मलोकन द्वारा मानसिक दृढ़ता प्राप्त की जा सकती है। एक संतुष्ट एवम् परिपूर्ण जीवन जीने के लिए इन उपरोक्त आयामों को अपनाना ही सफल जीवन की कुंजी हो सकता है।

–डॉ रामावतार शर्मा,
(चिकित्सक एवं लेखक

अष्टानिका पर्व में सिद्धचक्र विधान मण्डल की पूजा की जाती है

भागचंद जैन

जैन धर्म का अष्टांहिका पर्व अर्थात् 8 दिन तक मनाए जाने वाला पर्व है, नवें दिन हवन करने के साथ इस पर्व का समापन होता है। यह वर्ष में तीन बार कार्तिक, फाल्गुन एवं आषाढ़ माह में शुक्ल पक्ष की अष्टमी से पूर्णिमा तक आठ दिन के लिए मनाया जाता है ।

क्यों मनाया जाता है ?

सौधर्म इंद्र अपने इंद्र परिवार के साथ नंदीश्वर द्वीप जो आठवां द्वीप है, जिसमे अनादि, अनंतकालीन 52 अकृत्रिम, जो की शाश्वत है एवं किसी के द्वारा निर्मित नहीं है, जिन चैत्यालय है, में पूजन करके हर्षित होते है । इसी क्रम का अनुसरण करने की भावनानुरुप हम स्वयं में इंद्र की स्थापना करते हुए स्वयं को इंद्र मानकर, देवलोक जैसी शक्ति का आभास कर जिन मंदिरों में पूजा करते है ।

किसकी आराधना की जाती है ?

इस दौरान सिद्धों की आराधना करते हुए आठ दिनों का सिद्ध चक्र विधान मंडल का आयोजन करते है ।

विधान में सिद्ध भगवान का विस्तृत गुणानुवाद किया गया है ।

जो संसार के बंधनों से छूट गए है। जिनमे अनंत दर्शन अनंत ज्ञान अनंत सुख और अनंत वीर्य प्रकट हो गए है; जो द्रव्यकर्म, भावकर्म और नोकर्म से सर्वथा रहित हो गए है, उन्हे सिद्ध कहते है । ये लोक के अठाभाग में विराजमान है। सिद्धों का समूह ही सिद्धचक्र कहलाता है । सिद्धचक्र विधान में सिद्ध दशा प्रगट करने का विधान (उपाय) बतलाते हुए सिद्धों का गुणानुवाद किया गया है ।

सिद्ध चक्र विधान मंडल में प्रथम दिन 8, दूसरे दिन 16, तीसरे दिन 32, चौथे दिन 64, पंचम दिवस 128, छठे दिन 256, सातवे दिन 512 एवं आठवें दिन 1024 अष्ट द्रव्य के अर्ध समर्पित किए जाते है । इस तरह पर्व के इन दिनों में नंदीश्वर द्वीप की भी पूजा कर सकते है । अष्टान्हिका पर्व में सिद्धचक्र महामंडल विधान के आयोजन की शुरुआत मैना सुंदरी द्वारा अपने पति श्रीपाल के कुष्ठरोग निवारण हेतु जानी जाती है ।

■ नंदीश्वर द्वीप के अकृत्रिम जिन मंदिरों की पूजा का भी पर्व है

सिद्धचक्र विधान मण्डल की महिमा : चम्पापुर के राजा अरिदमन और रानी कुन्दप्रभा के तेजस्वी पुत्र रत्न हुआ। उस बालक का नाम श्रीपाल रखा गया । कालांतर में श्रीपाल की प्रतिभा को देखकर राज्य संचालन का दायित्व सौंप दिया गया । राजकार्य में दत्तिचत, कामदेव के समान श्रीपाल को एवं अन्य 700 वीरों को अचानक एक साथ महाभयानक कुष्ठ रोग हो गया, अंधेरा जिससे इन लोगों का शरीर गलने लगा एवं खून बहने लगा। इन सभी की दशा देखकर प्रजा जन अत्यन्त क्षुब्ध एवं दु:खी रहते थे। जब रोग की दुर्गन्ध के कारण वातावरण बिगड़ने लगा, तब चाचा वीरदमन के कहने पर श्रीपाल 700 वीरों के साथ नगर से बहुत दूर उद्यान में जाकर निवास करने लगे।

उधर उज्जयनी नगरी के राजा पुहुपाल एवं रानी पद्मरानी के गर्भ से सुरसुन्दरी एवं मैनासुन्दरी नाम की दो पुत्रियों ने जन्म लिया ।उनमें से सुरसुन्दरी शैव गुरु से एवं मैनासुन्दरी ने आर्यिका से धार्मिक अध्ययन किया था। पिता के पूछने पर सुरसुन्दरी ने अपनी स्वेच्छानुसार हरिवाहन से विवाह स्वीकार कर लिया, परन्तु मैनासुन्दरी ने कहा है कि कुलीन एवं शीलवती कन्यायें अपने मुख से किसी अभीष्ट वर की याचना कदापि नहीं करती है। मैनासुन्दरी की विद्वतापूर्ण वार्ता को सुनकर राजा पुहुपाल तिलमिला गये, अपना अपमान समझा और उन्होंने क्रोध में आकर कोढ़ी राजा श्रीपाल से विवाह कर दिया। राजा श्रीपाल के कुष्ठ रोग को दूर करने के लिये मैनासुन्दरी ने गुरु के आशीर्वाद एवं विधि के अनुसार अष्टांहिका पर्व में सिद्धचक्र महामण्डल विधान का आयोजन किया एवं अभिषेक के गंधोदक का सभी रोगियों के ऊपर छिड़काव किया, जिसके प्रभाव से श्रीपाल के साथ 700 वीरों का भी कुष्ठरोग ठीक हो गया था । कुछ समय बाद श्री पाल मैना सुन्दरी के साथ चम्पापुरी वापस आ गये। एक दिन श्रीपाल अपने महल के छत पर बैठे हुये थे। आकाश में बिजली चमकी, जिसे देखकर उन्हें वैराग्य हो गया। वे अपने पुत्र धनपाल को राज्य सौंपकर वन की ओर चले गये। उनके साथ 8000 रानियाँ तथा माता कुन्दप्रभा भी वन को प्रस्थान कर गई।

श्रीपाल ने मुनीश्वर के पास जाकर जिनदीक्षा धारण कर ली। उनके साथ 700 वीरों ने भी दीक्षा ले ली, माता कुन्दप्रभा व अन्य रानियों ने भी आर्यिका के व्रत ठाहण किये। श्रीपाल कठोर तपस्या करते हुए अल्पसमय में ही घातिया कर्मों को नष्ट कर केवलज्ञान प्राप्त किया और फिर शेष अघातिया कर्मों का भी क्षय कर मोक्षधाम को प्राप्त हुये एवं मैना सुंदरी ने भी अगले भव में शिवधाम में वास किया । अष्टांहिका पर्व में श्री जी के अभिषेक गंदोदक की विशेष महिमा होती है, किसी भी रोगी व्यक्ति के शरीर पर इसका छिड़काव करने से रोग, शोक का निवारण होता है।

अजमेर से होली स्पेशल रेल सेवाओं का संचालन

अजमेर, (कासं)। अजमेर से विभिन्न शहरों के लिए होली स्पेशल रेल सेवाओं का संचालन किया जा रहा है जिससे इन शहरों सहित रेल मार्ग के मध्य के शहरों के यात्री होली का त्योहार अपने प्रिय जनों के साथ मना सकेंगे अर्थात होली पर्व पर अतिरिक्त यात्री यातायात को देखते हुए यात्रियों की सुविधा हेतु संचालित की जा रही।

गाडी संख्या 09625, अजमेर-दौंड़ सुपरफास्ट साप्ताहिक स्पेशल रेल सेवा 04.04.24 तक अजमेर से प्रत्येक गुरूवार को 17.05 बजे रवाना होकर शुक्रवार को 18.20 बजे दौंड़ पहुॅचेगी। इसी प्रकार गाडी संख्या 09626, दौंड़-अजमेर सुपरफास्ट साप्ताहिक स्पेशल रेल सेवा दिनांक 05.04.24 तक (03 ट्रिप) दौंड़ से प्रत्येक शुक्रवार को 23.10 बजे रवाना होकर शनिवार को 23.40 बजे अजमेर पहुॅचेगी। यह रेलसेवा मार्ग में किशनगढ, जयपुर, दुर्गापुरा, सवाईमाधोपुर, कोटा, रामगंज मण्डी, भवानी मण्डी, नागदा, रतलाम, दाहोद, गोदरा, वडोदरा, भरूच, सूरत, वलसाड, वापी, बोईसर, वसई रोड, पनवेल, लोनावाला व पुणे स्टेशनों पर ठहराव करेगी। गाडी संख्या 05097, टनकपुर-दौराई त्रि-साप्ताहिक स्पेशल रेलसेवा दिनांक 22.03.24 से 29.03.24 तक (04 ट्रिप) टनकपुर से प्रत्येक शुक्रवार, सोमवार व बुधवार को 18.25 बजे रवाना होकर अगले दिन 13:10 बजे अजमेर पहुंचकर 13:20 बजे रवाना होकर 13.40 बजे दौराई पहुॅचेगी।

बीकानेर : नाइट टूरिज्म की संभावनाएं, एक साल से प्रस्ताव स्वीकृति का इंतजार

■ सर्दी और सामान्य मौसम में तो बीकानेर खूब पर्यटक आते है लेकिन, अप्रेल से जुलाई के बीच जैसे-जैसे पार चढ़ता है, पर्यटक आने से कतराने लगते है। इस दौरान देश और प्रदेश में आने वाले विदेशी पर्यटकों की बीकानेर आने की इच्छा भी होती है।

बीकानेर। सर्दी और सामान्य मौसम में तो बीकानेर खूब पर्यटक आते है लेकिन, अप्रेल से जुलाई के बीच जैसे-जैसे पार चढ़ता है, पर्यटक आने से कतराने लगते है। इस दौरान देश और प्रदेश में आने वाले विदेशी पर्यटकों की बीकानेर आने की इच्छा भी होती है। परन्तु भीषण गर्मी में दिन के समय यहां के गढ़ और हवेलियों को देखने की हिम्मत नहीं जुटा पाते। साथ ही बीकानेर की दुनियाभर में पहचान वाले खाने-पीने के व्यंजन से पर्यटक आकर्षित होता है। शहर के भीतर दुकानें गर्मियों में देर रात तक खुली रहती है, लेकिन नाईट टूरिज्म की तरफ ध्यान नहीं देने से इसे भुना नहीं पा रहे है।

पर्यटक बीकानेर का दीदार करने के लिए आते है। शाम ढलने के साथ ही उनको यहां कुछ भी देखने को नहीं मिलता है। बीकानेरी परकोटे में नाइट टूरिज्म की अपार संभावनाएं हैं। यहां की पाटा संस्कृति, रात को खुलने वाली खानपान की दुकानें, रात में परातों में बिकती मलाई, जूनागढ़ पर सतरंगी रोशनी...ऐसी असंख्य खासियतें हैं जो नाइट टूरिज्म को विकसित कर सकती हैं। इसके बावजूद जिला प्रशासन और पर्यटन विभाग कोई ठोस प्रयास नहीं कर रहा है। पर्यटन विभाग ने पिछले साल नाइट टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए प्रस्ताव तैयार कर मुख्यालय भेजा। इसके बाद प्रशासन और जनप्रतिनिधियों से मिलकर सार्थक प्रयास नहीं किए गए। नतीजन आज तक इस प्रस्ताव पर बात आगे नहीं बढ़ ी। अब गमिर्यों का सीजन फिर शुरू हो गया है। ऐसे में नाइट टूरिज्म को बढ़ ावा देने के लिए प्रयास करें तो सार्थक परिणाम मिल सकते है।

शहर में कई जगह रात के समय गर्मा-गर्म कचौड़ी-पकौड़ी, कढ़ ाई का दूध, पान और नमकीन मिलते है। जिनका स्थानीय लोग लुत्फ भी उठाने है। बारहगुवाड़ में रात के 9 बजे हो या रात के एक बजे का समय। गर्मा-गर्म कचौड़ी और पकौड़ी मिल जाएगी। मोहता चौक में मलाई और रबड़ी के रसीकों की देर रात तक भीड़ लगी रहती है।

दम्माणी चौक, कोटगेट, बड़ा बाजार में कढ़ाई का दूध, जस्सूसर गेट पर फास्ट-फूड तथा पान की दुकानें देर रात तक खुली रहती है । पर्यटन विभाग ने नाइट टूरिज्म के लि तैयार किए प्रस्ताव में पर्यटकों को देर शाम से लेकर रात तक यहां की संस्कृति और प्रसिद्ध खानपान के व्यंजनों से रूबरू करवाने का प्रस्ताव तैयार किया था। विभाग ने फूड ट्रेल का प्लान तैयार किया था। पर्यटन विभाग की ओर से पिछले साल ऊंट उत्सव के दौरान बीकाणा बाय नाइट का आयोजन कर नवाचार किया गया। इस दौरान रात के समय में शहर में अलग-अलग जगहों पर कार्यक्रम हुए। जिन्हें पर्यटकों के साथ स्थानीय लोगों ने भी खूब पसंद किया। परन्तु इस साल इस कार्यक्रम को ही उत्सव से हटा दिया गया। गर्मी का सीजन शुरू हो रहा है। पर्यटक यहां घूमने के लिए आना चाहते है। लेकिन गर्मी में दिन में तेज गर्मी रहती है और रात में साफ-सफाई का आभाव। नाइट टूरिजम को लेकर कोई खास व्यवस्था नहीं है। रात के लिए खास प्लान तैयार करना चाहिए। इससे गर्मी के सीजन में भी पर्यटक यहां पहुंचेंगे।

कवियों ने बिखेरे फाल्गुनी रंग

रतनगढ (निसं)। साहित्य कला संगम द्वारा आयोजित काव्य गोष्ठी में स्थानीय कवियों की सरस प्रस्तुतियों ने वातावरण को फाल्गुनी बना दिया । कुलदीप व्यास की सरस्वती वंदना से प्रारंभ गोष्ठी में संगम के अध्यक्ष वैद्य बालकृष्ण गोस्वामी ने कहा कि काव्य सृजन के लिए विषय वस्तु समाज में कहीं से भी किसी से भी मिल सकती है । उन्होंने मरुधरा में उपलब्ध केरिया पर कविता " हर मौसम खुशहाल केरियो ..." प्रस्तुत करते हुए इसकी विशेषताओं की जानकारी दी । वरिष्ठ कवि सज्जनलाल बैद ने अपनी रचना से शृंगार रस का रसास्वादन कराया । कुलदीप व्यास ने " माची धूम धमाल की होली आई रे ..." के साथ करारे व्यंग्य सुनाते हुए सभी को गुदगुदाया । भानुप्रिया शर्मा ने " होली खेलन राधा आई है ..." से बृज की होली का चित्र खींचा । दिलीप स्वामी की प्रस्तुति " हार से सीखा है बहुत मैंने....."। सुभाष मीणा के सुमधुर गीतों और तेजपाल गुर्जर के मुक्तकों ने खूब वाह वाही लूटी । नवोदयन एकेडमी में आयोजित इस कार्यक्रम में एकेडमी के छात्र लक्ष्य पारीक और मानव ने होली पर गीत प्रस्तुत किया । कार्यक्रम संचालक परमेश्वरलाल माली ने " लावणी " की पृष्ठ भूमि को रेखांकित किया । लीलाधर पारीक ने आभार प्रकट किया । इस अवसर पर रामचंद्र शर्मा,ज्योति सिंवर,रेनू बाला नथमल पारीक, बनवारीलाल पारीक आदि उपस्थित थे।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

सोमवार 18 मार्च, 2024

फाल्गुन मास, शुक्ल पक्ष, नवमी तिथि, सोमवार, विक्रम संवत 2080, आर्द्रा नक्षत्र सांय 6:11 तक, सौभाग्य योग सांय 6:36 तक, बालव करण रात्रि 9:51 तक, चन्द्रमा आज मिथुन राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मीन, चन्द्रमा-मिथुन, मंगल-कुम्भ, बुध-मीन, गुरू-मेष, शुक्र-कुम्भ, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रवियोग सांय 6:11 से, कुमार योग रात्रि 10:50 से आरम्भ होंगे। आज आनन्दा नवमी, श्री हरि जयन्ती है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: अमृत सूर्योदय से 8:06 तक, शुभ 9:36 से 11:06 तक, चर 2:05 से 3:54 तक, लाभ-अमृत 3:34 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 7:30 से 9:00 तक। सूर्योदय 6:37, सूर्यास्त 6:33

मेष
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। आज नये-पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकती है और मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं।

वृष
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित धन प्राप्त होगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक कार्यों में भाग ले सकते हैं।

मिथुन
मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। मनोबल-आत्मविश्वास बढ़ेगा। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कर्क
अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। अनावश्यक धन खर्च होगा। मन में असंतोष बना रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

सिंह
आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। घर-परिवार में सामूहिक प्रयासों से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

कन्या
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी।

तुला
व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। घर-परिवार में धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

वृश्चिक
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है।

धनु
परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। नवीन कार्यों में उचित सफलता मिलेगी।

मकर
व्यावसायिक कार्यों पर ध्यान देना ठीक रहेगा। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।

कुंभ
घर-परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में उचित सोच-विचार हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी।

मीन
घर-परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी। घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी।